रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली की दुनिया

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

"मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरुष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति के द्वारा हिलाए न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में उड़ान असम्भव है।"

वर्ष–5 | अंक 52 | जून 2011 | मूल्यः 5रू.

वन और पर्यावरण

हमारी सुन्दर धरती का चेहरा बिगड़ रहा है। उसके चेहरे पर पड़ती झुर्रियां हमें दिखाई नहीं देती। लगातार कटते पेड़ों के कारण उसकी सुंदरता खत्म होती जा रही है। नदी, तालाब, और झीले लगातार सिकुड़ रही है और हमें जल की दुःख भरी आवाज़ सुनाई नहीं पड़ रही है। जैसा कि हम जानते है, जंगल एक जटिल तंत्र है, जिसमें मुख्य रूप से पेड़ होते हैं, जो भूमि की मिटटी को बहने से रोकते हैं और जीवन के लिए बहुत सारी आवश्यक वस्तुएं प्रदान करते हैं। पेड़ पौधे एक खास प्रकार का पर्यावरण बनाते हैं जो विभिन्न प्रकार के जानवरों और पौधों को प्रभावित करते हैं। पौधे पर्यावरण का एक बहुत महत्वपूर्ण अंग हैं। पौधे वायु को शुद्ध करते हैं। गर्मी के दिनों को ठंडा रखने में सहायता करते है तथा रात में गर्म ऊर्जा का संरक्षण करते हैं।

पेड़–पौधे जमीन के लिए एक सुरक्षा कवच का काम करते हैं। जमीन पर फैली हुई पत्तियां, पानी को रोक कर रखती हैं। मरे हुए पौधे, खाद और मिट्टी में बदल कर पानी को रोकते है और मिट्टी की पौष्टिकता को बढ़ाते हैं। पक्षी, पेड़ों की शाखाओं पर अपने घोसलें बनाते है। कीड़े–मकौड़े पेड़–पौधों के विभिन्न हिस्सों पर रहते हैं। वन ही जीवन है। वन हमारे पर्यावरण को शुद्ध रखने में मदद करते हैं। पेड़–पौधे बड़ी मात्रा में ओक्सीजन (प्राण वायू) छोड़ते हैं और मनुष्यों के द्वारा छोड़ी गई कार्बन डाई ऑक्साइड लेते हैं, जो मनुष्यों के जीवित रहने के लिए आवश्यक है। इस बार की बरली की दुनिया में हम जानेंगे वनों का महत्व, उनके फायदे, उद्योगिकरण से वनों का नुकसान और वनों को बचाने के लिए हमारा दायित्व।

पर्यावरण का मतलब

पर्यावरण का मतलब है सब कुछ जो हमारे आस–पास है, धरती जिस पर हम चलते हैं या हवा जिससे हम सांस लेते हैं, रोशनी और गर्मी जो हमें सूर्य से मिलती है, इन सभी को मिलाकर पर्यावरण कहते हैं। प्रकृति, हरियाली, पेड़ और मानव इनका ही मेल पर्यावरण बनाता है। पर्यावरण से ही हमें भोजन और पानी, हवा, दवा, चारा और लकड़ी मिलती है। एक तरफ हमने हर क्षेत्र में तरक्की कर ली है, हम चाँद तक पहुँच गए हैं, दूसरी तरफ हमने अपने पर्यावरण को सबसे जयादा बिगाड़ लिया है और गन्दा कर दिया है, इसे ही प्रदूषण कहते है। वास्तव में समय आ गया है कि पर्यावरण सुधारना ही पड़ेगा, इसके लिए कुछ करना ही पड़ेगा क्योंकि सभी लोग ऐसी स्थिति में पहुँच रहे है जहाँ पीने के पानी की कमी, इंसान को शुद्ध खाने की कमी, हवा की कमी, जानवरों को चारे की कमी, पक्षियों व जानवरों को जंगलो की कमी, एक से एक भयंकर समस्या बन कर इंसान के सामने आकार खड़ी हो गयी है। कुल मिलाकर यह हालत हो गयी है कि वही पेड़ पौधे जो हमें जीवन देते है हमने उन्हें मौत दे दी है।

वन हमारा घर

हम सभी जानते है कि आदिवासी और जंगल एक–दूसरे पर निर्भर करते है। "जंगल ही हमारा जीवन है। हम जंगल से है और जंगल भी हमसे है। जंगल के बिना आदिवासी का जीवन वैसा ही है जैसा पानी के बिना मछली का।" जंगल के ही सहारे आदिवासियों की कई पीढ़ियाँ बीत गई। बचपन से लेकर मृत्यु तक का पूरा जीवन जंगलो में ही बीत जाता है। आदिवासी और जंगल से सम्बंधित एक दोहा है, जिसमें लिखा गया है, "जंगल ही हमारा मायका, जंगल ही ससुराल।जंगल भीगी आँख है, जंगल आँखे लाल।"

आमतौर पर जब हम जंगल में रहने वाले आदिवासियों के विकास के बारे में बात करते है तो वह उनकी आर्थिक चीजों के बारे में ही होती है। जंगल में बहुत सारी ऐसी चीजें भी मिलती है जिनका कोई आर्थिक महत्व नहीं होता, लेकिन हमारा उन पर ध्यान ही नहीं जाता। ये सब रोज़मर्रा की बड़ी ज़रूरते पूरी करती है और उन्हें आवश्यक मात्रा में उपलब्ध कराती है। जंगलो से महुआ, गुल्ली, शहद, तेंदूपत्ता व फल, अचार, मेनर, आवला, राम्बुहारी, पत्तल–दोने, भाभर–घास, भमोड़ी सब कुछ मिलता है। लेकिन अब इसमें कमी आ गयी है। जंगलो से बहुत सारी पौष्टिक चीजे मुफ्त में मिल जाती थी जैसे कि बेर, जामुन, अमरुद, मकोई, सीताफल, आम और कई तरह के फल–फूल। आदिवासी जंगल, पेड़, पत्थरों को देवता मानते है। उनका जीवन प्रकृति के बहुत करीब है। आदिवासी का जंगल से माँ–बेटे का रिश्ता है। वे जंगल से उतना ही लेते है जितनी उनको जरुरत है। प्रकृति के बीच रहने वाला आदिवासी समुदाय सबसे कम प्राकृतिक संसाधनों में गुजर–बसर करने वाला समुदाय है। खासकर महिलाएं पर्यावरण और जंगल के ज्यादा करीब होती हैं क्योंकि वही है जो अच्छी तरह से इसकी देख–भाल कर सकती है। अगर जंगल न हो और पेड़–पौधे ना हो तो हम जीवित नहीं रह पायेंगे। जंगल और इंसान दोनों एक दूसरे पर निर्भर है, ना वो हमारे बिना नहीं रह सकते और ना ही हम उनके बिना।

वनों की उपयोगिता

साफ़ हवा, ताज़ा पानी और उपजाऊ मिट्टी तो हमें जंगलो से मिलती ही है। इसके साथ–साथ जंगल से हमें खाने की चीजे, दवाईयां, फल–फूल, जलाने के लिए लकड़ी और जानवरों को खिलाने के लिए चारा भी मिलता है। वनों से पानी जमीन के अंदर इकठ्ठा हो जाता है और मिट्टी भी ऊपजाऊ बनी रहती है।

लकड़ियो से कई प्रकार के सामान जैसे पलंग, अलमारी, सोफा, घर में सजाने वाली वस्तुएं आदि बनती है। गांव के बहुत सारे लोगों की जीविका चलाने का साधन वनों के वृक्षों पर निर्भर रहता है।

वन मुख्य रूप से ईंधन का साधन होते है। महिलाएँ इन ईंधनो के उपयोग के लिए एक परम्परागत भूमिका निभा रही है। इन ईंधनों के बिना न तो फसल उगाई जा सकती है, ना उनकी कटाई हो सकती है और ना ही खाना बनाया जा सकता है। वन आदिवासी लोगों के लिए कमाने का बहुत बड़ा जरिया है। पिछड़े क्षेत्रो में महिलाएं और बच्चें लघु वन उपज को एकत्रित करने का काम करते है। इन वस्तुओं को एकत्र कर के , उनसे विभिन्न प्रकार की वस्तुएं बना कर उन्हें बाजार में बेचते हैं।

वनों को हो रहा नुकसान

आज पूरी दुनिया में जंगलो की कटाई एक बहुत बड़ी समस्या बन गयी है। तेज़ी से लगने वाले कारखानों के कारण यह समस्या बहुत बढ़ गयी है। जंगलो की कटाई से केवल पानी की कमी ही नहीं आई है बल्कि इसी के कारण बाढ़, सूखा पड़ना, जमीन का कटाव, जैसी समस्याए भी बढ़ती जा रही हैं। इस तरह पेड़ों का कटना अगर चलता रहा तो ऐसा समय जल्दी आ जाएगा जब वातावरण से साफ़ हवा की कमी हो जाएगी और इंसानों का जीना मुश्किल हो जाएगा। जंगल काटने से मौसम भी बदलता जा रहा है। आज–कल गर्मी के दिनों में भयंकर लू चलती है। ऊपर से लकड़ी की भी कमी हो गयी है। पहले घने जंगलों के कारण पानी अच्छा गिरता था जिससे फसलें भी अच्छी होती थी और किसानों के साल भर का खाना, और खर्चा–पानी आसानी से निकल जाता था। लेकिन अभी ज्यादातर लोगों को बारिश ना होने के कारण अनाज खरीद कर लेना पड़ता है और अपने घरेलू पशुओं के लिए भी चारा खरीद कर लेना पड़ता है। जंगलो के कट जाने से रहन–सहन में भी बहुत फर्क पड़ता है।

जंगल कटने की वजह से जलवायु में भयंकर अंतर आ रहा है। कागज़ बनाने, बगीचे बनाने, घर और सड़के बनाने के लिए और दूसरी जरूरतों को पूरी करने के लिए हम जंगलो को काट रहे है। इसी से धरती गर्म हो रही है और बर्फ पिघल रही है और उपजाऊ जमीन रेगिस्तान में बदल रही है।

चिपको आंदोलन

चिपको आंदोलन हिमालय के गढ़वाल क्षेत्र के जिला चमोली, गाँव रैडी से शुरू हुआ था। चिपको आंदोलन ने विश्व समुदाय को जल, जंगल, तथा जमीन के प्रति आज से 34 साल पहले सजग कर दिया था। उस समय ना तो नदियाँ सूखनी शुरू हुयी थी लेकिन रैडी गाँव की एक साधारण महिला गौरा देवी ने वनों के महत्व और प्रकृति की पीड़ा को समझ लिया था। उसने सीधे शब्दों में ठेकेदार के आदमी जो रैडी के जंगल काटने आये थे उनसे कहा कि ये जंगल हमारे देवता है, इन पर हमारा जीवन आश्रित है, इसलिए हम उन्हें नहीं काटने देंगे और गौरा देवी पेड़ पर चिपक गयी। यही चिपकना "चिपको आंदोलन" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। तब गौरा देवी को भी पता नहीं था कि उसका यह चिपकना ही एक दिन विश्व पटल पर इतना प्रसिद्ध बन जाएगा। इस आंदोलन ने विश्व समाज को वनों के प्रति गंभीरता से विचार करने पर बल दिया है और जागरूक किया है।

गौरा देवी के द्वारा शुरू किया गया आंदोलन तो पूरी दुनिया में प्रसिद्धि पा गया। गौरा देवी का विचार और आदर्श आज भी हमारे साथ है तथा सदियों तक मानव सभ्यता को जल, जंगल और जमीन से जुड़े मुद्दों के प्रति सजग करता रहेगा। गौरा देवी जीवन भर सामाजिक हित के लिए लड़ती रही। उनका सपना था कि हमारा पहाड़ स्वालम्बी तथा हम अपनी आवश्यक जरूरतों कि पूर्ति के साथ साथ अपने वनों का संरक्षण करे। आज हमारे लिए ज़रुरी है कि हम एक नहीं हजारों गौरा देवी बनकर अपने "जल जंगल और जमीन" के नारे को सफल बनाएँ। आज ऐसा समय आ गया है कि हमें इस पर मिल बैठकर कुछ सोचना ही नहीं इसके लिए पूरे तन मन से कुछ करना भी होगा। जिससे हम आने वाली पीढ़ी को इसके भयानक परिणामों से बचा सके और ये हम सब का कर्तव्य है कि हम इस अभियान में हिस्सा ले ताकि हम प्रकृति द्वारा दिए गए जंगल के उपहारों का आनंद ले सकें।

वनों को बचाने के लिए हमारा दायित्व

पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए पेड़ लगाना आवश्यक हो गया है। पेड़–पौधे ही है जो आज की आधुनिक तकनीकों के इस्तमाल से होने वाले प्रदूषण को कम कर सकते है। वन हमारे उपयोग का साधन है ना कि उपभोग का। इसमें दो मत नहीं है की वनों से मिलने वाली उपज हमारी रोज़मर्रा की जिंदगी में अहम भूमिका निभाती है। जीवन में सामंजस्य बनाए रखने के लिए पेड़ लगाना बहुत जरुरी है।

इन समस्याओं को कम करने के लिए हम सोचे कि जिस गाँव में हम पैदा हुए है, बड़े हुए है, उस गाँव में हमने सिर्फ खाया और गवांया है। इस बात पर विचार करने की जरुरत है कि किस तरह हम, हमारे पर्यावरण को वैसा ही हरा–भरा और सुन्दर बनाए जिस तरह से ये हमारे पूर्वजों के जमाने में था। जंगलो की कटाई रोकनी पड़ेगी। जैसे चिपको आंदोलन में महिलाओं ने एक जुट होकर पेड़ों को कटने से बचाया था। हमारे देश में तो पेड़ को जीवन का एक मत्वपूर्ण अंग मानते है,

इतना ही नहीं पेड़ों की पूजा करते है और दूसरी तरफ जरुरत के समय किसी दूसरे पेड़ को काट देते है। घर में खाने वाले लोग ज्यादा होने पर, और खेती की ज़मीन कम होने से पेड़ों को काट कर उस ज़मीन पर खेती कर हम घर के लोगों कि भूख तो मिटा देते है पर इससे पर्यावरण का कितना नुकसान हुआ यह सोचने का समय भी हमारे पास नहीं है। जिस तरह हम इस समस्या के बारे में अब सोचने लगे है उसी तरह इसको रोकने के लिए भी हमें प्रयास करने होंगे। भारत में पर्यावरण संरक्षण से सम्बंधित करीब 200 से ज्यादा कानून बनाए गए है। जंगल में रहने वाले जानवरों की रक्षा के लिए कई उपाय किए गए हैं। किसी भी जानवर का जंगल में जाकर शिकार करना अपराध है। जिससे जंगली जानवर की संख्या कम ना हो और वो जंगल में सरलता से घूम सके और जंगल में खुशहाली रहे। इसके लिए और पेड़ लगातार लगाने होंगे। यह भी ध्यान देना होगा कि बेदर्दी से पेड़ काटने कि बजाय जलाने के लिए सूखी व गिरी हुई लकड़ी काम में लाना चाहिए। ईश्वर ने इंसान को श्रेष्ठ बनने की क्षमता दी है लेकिन जब हम आध्यात्मिक गुणों को अपनाएंगे तभी हम श्रेष्ठ बनने और श्रेष्ठ काम करने के योग्य बन पाएंगे। पर्यावरण को बचाना सभी की जिम्मेदारी है। इसी जिम्मेदारी को निभाने के लिए बरली संस्थान पर्यावरण प्रेमी है। आप और हम मिलकर पर्यावरण को सुधार सकते है ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियों को स्वस्थ जीवन मिल सके। जल और वायु के परिवर्तन से देश जो कठिनाईयां झेल रहे है, उनमें अनुकूल उपायों को लागू करने में सभी को समर्थन देना होगा। जंगल को काटने से कार्बन बढ़ रहा है और धरती गर्म हो रही है इससे मौसम में बदलाव हो रहा है। इन सब कारणों से हमारे जीवन पर बुरा असर पड़ रहा है और इसके परिणाम हमें भुगतने होंगे।

"जीवन" शब्द के अक्षरों में भी दो तिहाई भाग "वन" का है। प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए उसके एक तिहाई भूभाग में वनों का होना जरुरी है। जल, जमीन, और जंगल, इनकी रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है और हमारी जरुरत भी। कहते है कि जब आँख खुली तभी सवेरा इसलिए उठिए और अपने पर्यावरण की रक्षा के कदम बढ़ाइए।

संस्थान के समाचार

पर्यावरण दिवस के अवसर पर कार्यशाला

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में पर्यावरण दिवस के अवसर पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया

जिसका मुख्य विषय था "वन–प्रकृति आपकी सेवा में"। कार्यशाला का उद्घाटन 3 जून 2011 को हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे डॉ. कृष्णामूर्ति, क्षेत्रीय निदेशक, राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान तथा अध्यक्षता आशा निलाया आरोग्य धाम प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र की डॉ. सिस्टर निर्मला ने की। निदेशक मंडल के सदस्य डॉ. गीता हांडा, डॉ. सुनिता मालवीया तथा डॉ. जनक पलटा मगिलिगन भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

कार्यशाला का समापन 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रशिक्षणार्थियों द्वारा की गयी प्रार्थना से हुई इसके बाद सभी अतिथियों का संस्थान में बनाई गयी कला कृतियों से स्वागत किया गया। संस्थान की निदेशिका श्रीमती ताहिरा जाधव ने तीन दिवसीय कार्यशाला में चर्चा किए गए विषयों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बहाई पवित्र लेखों में जैसा उल्लेख हैं कि "एक ही पेड़ के तुम फल हो, एक ही शाखा की पत्तियाँ।" जिस प्रकार मानवजाति में एकता होनी चाहिए उसी प्रकार प्रकृति और मानवता के बीच भी सामंजस्य होना चाहिए। स्व. श्री जिम्मी जीजाजी द्वारा पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि बरली संस्थान इन प्रयासों को जारी रखेगा।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि इन्नरव्हील क्लब, अप टाउन की

प्रेसिडेंट श्रीमती सौदामिनी पौराणिक ने कहा कि हमें

पर्यावरण दिवस के अलावा भी हर दिन पर्यावरण के प्रति सजग और संवेदनशील होना चाहिए।

मुख्या वक्ता, श्री अजित केलकर, अध्यक्ष, अभिनव सेंटर फॉर

डेवलेप्मेंट ऑफ़ एग्रीकल्वर्स एंड हूमन रिसोर्सिस ने जैविक

खेती, गोबर गैस के फायदे और रसायनों तथा कीटनाशकों के दुष्प्रभाव पर रोचक जानकारी दी।

अमेरिका के कोनेकटिकट विश्वविद्यालय से बरली संस्थान में आई सुश्री ग्रेस काबेल ने सौर्य तथा पवन ऊर्जा जैसे वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों के बारे में बताया।

निदेशक मंडल की सदस्या डॉ. गीता हांडा ने संस्थान में हो रहे पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों की सराहना की।

इस अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों ने पर्यावरण पर आधारित

भिलाली गीत और निमाड़ी नाटक प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के धार, खरगोन, अलीराजपुर, बड़वानी, इंदौर जिले एवं महाराष्ट्र की 70 आदिवासी एवं ग्रामीण महिलाओं ने भाग लिया।

संस्थान के मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री योगेश जाधव ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

बरली ग्रामीण महिला विस्तार केन्द्र मे विश्व पर्यावरण दिवस मनाया

5 जून 2011 को बरली ग्रामीण महिला विस्तार केन्द्र कोरर मे विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर तीन दिवसीय कार्यशाला तथा रैली का आयोजन किया गया। तीन दिवसीय कार्यशाला 2 जून से 4 जून 2011 में वेबरती, गड़पिछवाड़ी, मरकाटोला, कन्हारपुरी व कोरर के 28 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में पर्यावरण बिगड़ने के कारण तथा पर्यावरण को सुरक्षित रखने व इसके बचाव के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई तथा प्रशिक्षणार्थियों ने पर्यावरण को सुरक्षित रखने के तरीकों के बारे में पोस्टर व चित्र बनाएं। तीन दिवसीय

कार्यशाला का परिचालन केन्द्र की प्रशिक्षिका श्रीमती ममता रावल व सह प्रशिक्षिका कु. सुरेखा मरकाम ने किया।

5 जून सुबह 10 बजे बरली ग्रामीण महिला विस्तार केन्द्र कोरर से 40 प्रतिभागियों की एक रैली निकाली गई। रैली में प्रतिभागी पेड़–पौधे लगा, पर्यावरण बचा, जल ही जीवन है, आदि नारे लगाते हुए कोरर शहर का भ्रमण करके फारेस्ट रेस्ट हाउस कोरर जाकर पहुँचे।

5 जून दोपहर 12 बजे कोरर फारेस्ट रेस्ट हाऊस में बरली ग्रामीण महिला विस्तार केन्द्र कोरर व कोरर वन विभाग के

सम्मिलित प्रयास से पर्यावरण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एस.डी.ओ. श्री राजवीर सिंग ने कहा "पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए बरली ग्रामीण महिला विस्तार केन्द्र के यह प्रयास प्रशंसनीय है।"

कार्यक्रम के विशेष अतिथि थे फारेस्ट रेंजर श्रीमान मुन्ना सिंग। उन्होंने बरली ग्रामीण महिला विस्तार केन्द्र कोरर के महिलाओं तथा प्रशिक्षिका की प्रशंसा करते हुए कहा कोरर में पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए महिलाओं का यह उद्योग पहली बार देखा गया है। उन्होंने पर्यावरण को सुरक्षित रखने व इसके बचाव के बारे में पेड़–पौधों का कितना महत्व है, यह बताया।

कार्यक्रम में उपस्थित वन विभाग के डेपुटि रेंजर के.के. सोनी ने पर्यावरण दिवस के अवसर पर राज्य के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंग का शुभ संदेश पढ़कर सुनाया।

विस्तार केन्द्र की प्रशिक्षिका श्रीमती ममता रावल ने बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इंदौर के संक्षिप्त परिचय बताते हुए कंहा कि बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान पर्यावरण प्रेमी है। संस्थान को सन 2009 में पर्यावरण मित्र पुरस्कार मिला है। संस्थान में हर रोज उपयोग होने वाले पानी को फिर से खेतों में उपयोग किया जाता हैं। वेस्ट पेपर व सूखे पत्तों से कंडे बनाएं जाते है जो धुँआरहित और जलाने के काम मे लिए जाते है। संस्थान में 100 महिलाओं के खाना पकाने के लिए लकड़ी के बदले सोलर चूल्हे का उपयोग किया जाता है। यह सभी जानकारी हम तीन माह के प्रशिक्षण के दौरान महिलाओं को देते है।

विस्तार केन्द्र के प्रशिक्षणार्थी कु. सविता निबाद ने जैविक खेती, कु. पदमनी धनकर ने पर्यावरण सुरक्षा के उपाय तथा श्रीमती रामशीला पटेल ने महिला का परिवार व समाज में योगदान पर अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का संचालन कु. सुरेखा मरकाम ने किया व पूर्व प्रशिक्षणार्थी कु दिव्या हिचामी ने आभार व्यक्त किया।

संस्थान को देखने आये मेहमान

⇒ 8 जून 2011 आनंदवन जिला चंद्रपुर से श्री प्रशांत

बापुराव देशमुख संस्थान देखने आए। श्रीमती ताहेरा जाधव ने उन्हें संस्थान की गतिविधियों की जानकारी दी तथा श्री योगेश जाधव ने उन्हें संस्थान दिखाया। उन्होंने सोलर ड्रायर के बारे में जानकारी प्राप्त की और वापस जाकर अपने संस्थान में फलों और सब्जियों को सुखाने के लिए इसे बनाने और उपयोग में लाने की इच्छा दिखाई।

⇒ 11 जून 2011 को विश्व बंधुत्व आन्दोलन के केंद्र में प्रशिक्षण लेने आए 12 युवाओं का दल, फादर श्री विसेंट

कारमेल के साथ संस्थान देखने आए। श्री योगेश जाधव ने उन्हें संस्थान का भ्रमण कराया। संस्थान की गतिविधियों को देखकर उन्होंने कहा "गाँव की महिलाओं के लिए की गई आपकी सेवा की हम दिल से प्रशंसा करते हैं। ईश्वर आपको और इस अच्छे कार्य को आशीर्वाद दे।"

⇒ 13 जून 2011 को विभिन्न स्कूलों और संस्थाओं से सिस्टर्स का एक दल संस्थान देखने आया। श्रीमती ताहेरा जाधव ने उन्हें संस्थान दिखाया। संस्थान देखकर सिस्टर कीर्ति ने यह उद्‌गार व्यक्त किए "बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान सचमुच बधाई के पत्र हैं। यहाँ आकर मुझे अद्‌भुत खुशी का अनुभव हुआ। प्रभु आपके हाथों गाँव की महिलाओं के उत्थान के लिए महान कार्य कर रहे हैं। प्रभु आपके साथ सदा रहे, आपके हर कार्य में आशीष दे और आपको एवं परिवार को आत्म संतुष्टि से सम्पन्न करे।"

⇒ 18 जून 2011 को भोपाल से 11 युवाओं का समूह संस्थान देखने के लिए आया। श्री योगेश जाधव ने उन्हें संस्थान

दिखाया। संस्थान की गतिविधियों को देखकर वे बहुत प्रभावित और प्रसन्न हुए।"

⇒ ब्रीस्बेन, ऑस्ट्रेलिया से सुश्री सफिरा रामेश्वर 19 से 21 जून 2011 तक संस्थान में रही संस्थान की गतिविधियों को देखकर उन्होंने लिखा "मुझे इस जगह से और यहाँ के लोगों से प्रेम हैं। इनको पढ़ते हुए देखकर और

सामाजिक परिवर्तन को चरितार्थ होते देखना कितना प्रेरणादायक हैं। यहाँ कला, पर्यावरण संरक्षण, रोज़गार शिक्षा और अध्यात्मिक विकास सबको कितना ध्यान से सिखाया जाता हैं। इस संस्थान को जानकर में कितना सम्मानित और खुश महसूस कर रही हूँ। आप सभी को बहुत धन्यवाद।"

भिलाली गीत

आवू वो सेड़ा–सेड़ा पोर झाड़का चुपजे बोनसिया
आवू सेड़ा–सेड़ा पोर झाड़का चुपजे बोनसिया।
सुब झाड़का काटाई गोया ने जोंगोल खोतोम होई गोयो बोनसिया।
पाणी पीणे नी जोड़े ती कोसा कोरीन जीवसु।
सुब जीव–जोनवार मोर जासे बोनसिया।
आवू सेड़ा–सेड़ा पोर झाड़का चुपजे बोनसिया।

खाणो कोसा रांदसुं लाकड़ा नी जोड़ता वो बोनसिया।
आठ कोस पोर देखू रे दादा लाकड़ा लेणे जाजे।
भार हाकली–हाकलीन मुनका पोर भारे कोदा मोरी गोया बोनसीया।
झाड़का नी होसे ती वाहलो, पाणी नी जोड़से
ती घाबराइन पोरेसान होय गोया बोनसिया।
आवू सेड़ा–सेड़ा पोर झाड़का चुपजे बोनसिया।

काई चूलाने कोरजू चुकाड़जे आपणु।
काई धुलान कोरजू चुकाड़जे आपणु।
काई धोरतीन कोरजू चुकाड़जे आपणु।
गाँवो–गाँवो मां भेला होइन आमु झाड़का चुपसुं।
नीला–नीला होयसे हिमी जोंगोल ने खेते।
झाड़का होसे ती आपणुक वाहलो, पाणी सुब जोड़से बोनसीया।
आवू सेड़ा–सेड़ा पोर झाड़का चुपजे बोनसिया।

हिन्दी अनुवाद

आओ मेंड़–मेंड़ पर पेड़ लगाएँ बहनों
आओ मेंड़–मेंड़ पर पेड़ लगाएँगे बहनों।
सब पेड़ कट गएं, जंगल खत्म हो गए बहनों।
पानी पीने को न मिले तो कैसे रहेगी जान।
सब जीव–जन्तु मर जाएँगे बहनों।
आओ मेंड़–मेंड़ पर पेड़ लगाएँगे बहनों।

खाना कैसे पकाएं, लकड़ी नहीं मिलती बहनों।
आठ कोस पर देखो रे भैया, लकड़ी लेने जाते हैं।
लाद–लादकर गठ्ठा सिर पर बोझ से मर गए बहनों।
पेड़ नहीं होंगे तो हवा, पानी नहीं मिलेंगे
तो घबराहट से परेशान हो गए बहनों।
आओ मेंड़–मेंड़ पर पेड़ लगाएंगे बहनों।

कुछ चूल्हे का कर्ज़ चुकाएंगे हम।
कुछ मिट्टी का कर्ज़ चुकाएंगे हम।
कुछ धरती का कर्ज़ चुकाएंगे हम।
गाँव–गाँव में मिलकर हम पेड़ लगाएँगे।
हरे–भरे फिर से होंगे जंगल और खेत।
पेड़ होंगे तो हमें हवा, पानी सब कुछ मिलेगा बहनों।
आओ मेंड़–मेंड़ पर पेड़ लगाएँगे बहनों।

रचनाकार/गायिका:बया, डांगरी, हिंगा

बरली की दुनिया ऑनलाईन भी है। इसके पहले वाले अंक www.barli.org के our publications में देख सकते हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी
श्रीमती ताहेरा जाधव, श्रीमती ढेडी बागदरे

प्रिंटेड मैटर–बुक पोस्ट

पता

____

____

____

____

हमें पत्र लिखें

“बरली की दुनिया” के पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप हमें नीचे लिखे पते पर पत्र लिखें कि आपको नियमित “बरली की दुनिया” मिल रही है या नहीं।

संपादक “बरली की दुनिया”
बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान
180 भमोरी, न्यू देवास रोड, इंदौर 452010 (म.प्र.) फोन न. 0731–2554066

रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, 180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इन्दौर – 452010 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित
मुद्रण स्थल : राजा ऑफसेट, 863/9,नेहरूनगर, इन्दौर द्वारा मुद्रित संपादक : डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन